कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 06 सितम्बर, 2025

बकरी पालन: किसानों की समृद्धि की कुंजी

कोमल [1*], कच्छवे मुकुंद रमेश [2], राजेश कुमार [3] और अमित कुमार [4]

[1]सहायक प्राध्यापक, पशु पोषण विभाग, महात्मा गांधी पशु चिकित्सा महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान

[2]पीएच.डी. शोधार्थी, पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन विभाग, आईसीएआर-राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा

[3]सहायक प्राध्यापक, पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी पशु चिकित्सा महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान

[4]सहायक प्राध्यापक, पशु चिकित्सा जैव-रसायन विभाग, महात्मा गांधी पशु चिकित्सा महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान

***E-mail: dalalkomal07@gmail.com**

भारत में बकरी पालन को सदियों से "गरीब आदमी की गाय" कहा जाता है क्योंकि यह सीमांत एवं लघु किसानों की आय और पोषण का मुख्य साधन रही है। बकरी पालन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसे कम पूंजीए सीमित भूमि और साधारण संसाधनों के साथ भी शुरू किया जा सकता है। बकरियाँ कठोर जलवायु में भी आसानी से जीवित रहती हैं और इनकी देखभाल अन्य पशुओं की तुलना में अपेक्षाकृत सरल होती है। बकरी से दूध, मांस, चमड़ा, ऊन और खाद प्राप्त होती है, जो किसानों को आर्थिक मजबूती प्रदान करती है। आज के समय में जब रोजगार और आय के नए साधन तलाशे जा रहे हैंए बकरी पालन किसानों के लिये एक स्थायी एवं लाभकारी व्यवसाय साबित हो रहा है।

आहार एवं पानी प्रबंधन

बकरियों के लिये संतुलित आहार अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आहार संतुलित न हो तो बकरी का उत्पादन घट जाता है और वह जल्दी बीमार भी पड़ सकती है। एक वयस्क बकरी को प्रतिदिन उसके शरीर के भार का लगभग 3-5 प्रतिशत हरा, सूखा व दाना मिश्रण देना चाहिए। उदाहरण के लिये, यदि बकरी का भार 30 किलो है तो उसे 1-1.5 किलो हरा चारा, 500-600 ग्राम सूखा चारा और 200-300 ग्राम दाना मिश्रण देना उपयुक्त होगा। दुग्ध उत्पादन करने वाली बकरियों को अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है। उन्हें 500 ग्राम तक हरा चाराए 300-500 ग्राम दाना मिश्रण तथा 200 ग्राम अतिरिक्त चोकर या खली देना लाभकारी है। दाना हमेशा साफ, सूखा और ताजा होना चाहिए। फफूँदी लगा या नमी युक्त दाना कभी नहीं देना चाहिए। यह उचित रहेगा कि दाना घर पर ही बनाया जाये जिसमें 60-65 प्रतिशत अनाज दला हुआ), 10-15 प्रतिशत चोकर, 15-20 प्रतिशत खली, 2 प्रतिशत मिनरल मिस्चर तथा 1 प्रतिशत नमक का मिश्रण होना चाहिये।

बकरियों के चराने के स्थान में परिवर्तन करते रहना चाहियेए हमेशा एक ही स्थान पर नहीं चराना चाहिये। पानी बकरियों के स्वास्थ्य के लिये उतना ही महत्वपूर्ण है जितना आहार। एक बकरी सामान्य दिनों में 2-3 लीटर पानी पीती है, जबकि गर्मियों में यह मात्रा 4-5 लीटर तक पहुँच सकती है। पानी के बर्तन प्रतिदिन साफ करने चाहिए और पानी कम से कम दो बार बदलना चाहिए। नदी, तालाब व गड्ढे के रुके हुए पानी को पीने से बकरियों को बचाना चाहिये।

आवास व्यवस्था

बकरी पालन में आवास का विशेष महत्व है। बकरियों के लिये शेड हमेशा हवादार, सूखा और साफ-सुथरा होना चाहिए। बरसात के समय फर्श पर पानी जमा न हो, इसके लिये फर्श ऊँचा होना चाहिए। सामान्यतः 20 x 60 वर्ग फुट क्षेत्र आच्छादित और 40 x 60 वर्ग फुट क्षेत्र खुला रखने से बकरियों को पर्याप्त जगह मिलती है।

शेड की दीवारें बहुत ऊँची न हों लेकिन उनमें वेंटिलेशन अवश्य होना चाहिए ताकि हवा और रोशनी आसानी से अंदर जा सके। बच्चों और बड़ी बकरियों को अलग-अलग बाड़ों में रखना चाहिए। अधिक भीड़-भाड़ से बकरियों में रोग फैलने का खतरा बढ़ जाता है।

नर बकरी (बोअर) का चुनाव

बकरी पालन में नस्ल सुधार और उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिये अच्छा नर (बोअर) चुनना बहुत आवश्यक है। नर बकरी हमेशा स्वस्थ, बलिष्ठ और अच्छी नस्ल का होना चाहिए। नर का चुनाव करते समय उसकी आयु, वजन, शारीरिक बनावट और स्वास्थ्य की विशेष जाँच करनी चाहिए। ध्यान रखना चाहिये कि चयनित बकरे की माँ अधिक दूध व अधिक बच्चे देने वाली हो। प्रजनन के लिये सामान्यतः 1 नर 30-35 मादा बकरियों के लिये पर्याप्त होता है।

गर्भावस्था से पहले का प्रबंधन

गर्भावस्था से पहले बकरी को परजीवी मुक्त करना चाहिए और उसे पौष्टिक आहार देना चाहिए। अधिक से अधिक बकरियों को

कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 06 सितम्बर, 2025

ऋतु में लाने और अंडक्षरण हेतु, प्रजनन से 21 दिन पूर्व से संतुलित आहार खिलाना चाहिए।

इस अवधि में हरा चारा, दाना मिश्रण और खनिज लवण की उचित मात्रा देना जरूरी है। कमजोर या अत्यधिक मोटी बकरियों को गर्भाधान से पहले विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। विटामिन और खनिज मिश्रण देने से प्रजनन क्षमता बेहतर होती है। बकरी के मद में आने पर 12 घन्टे बाद गाभिन कराना चाहिये। अप्रैल-मई तथा अक्टूबर-नवम्बर में गाभिन कराने पर बच्चे अनुकूल मौसम में प्राप्त होते हैं।

गर्भावस्था के दौरान प्रबंधन

बकरी की गर्भावस्था लगभग 150 दिन (5 माह) की होती है। गर्भाधान के बाद गाभिन बकरियों का उपयुक्त विधि (प्रजनन के बाद ऋतु में न आना, अल्ट्रासोनोग्राफी, पेट का उभार देखकर) से गर्भ परीक्षण (गर्भाधान के 20 से 30 दिन के अंदर) करना चाहिए। इस अवधि में बकरी को संतुलित आहार के साथ अतिरिक्त ऊर्जा और प्रोटीन युक्त आहार देना चाहिए। गाभिन बकरियों को गर्भावस्था के 100 दिन पश्चात आहार की मात्रा बढ़ाकर देना चाहिए। गर्भवती बकरी को आरामदायक स्थान पर रखना चाहिए और अधिक दूरी तक चराने के लिये नहीं ले जाना चाहिए। प्रसव से 1 सप्ताह पूर्व बकरी को अलग रखें तथा उस स्थान पर सुखी घास की बिछावन दें।

प्रसव के बाद का प्रबंधन

प्रसव के बाद बकरी को गुनगुना पानी और सुपाच्य आहार देना चाहिए। हरा चारा थोड़ी मात्रा में देना प्रारंभकरें और धीरे-धीरे उसकी मात्रा बढ़ाएँ। बकरी को पर्याप्त विश्राम देना चाहिए। दूध देने वाली बकरी को अतिरिक्त खनिज लवण और संतुलित दाना अवश्य देना चाहिए ताकि दूध उत्पादन अच्छा बना रहे।

नवजात मेमने का प्रबंधन

नवजात बच्चे का जन्म होते ही उसकी नाक और मुँह साफ करना चाहिए ताकि उसे साँस लेने में दिक्कत न हो। नवजात बच्चे की नाभि पर टिंचर आयोडीन का घोल नाल के निकलने तक अवश्य लगायें। जन्म के तुरंत बाद (आधा से एक घंटे में) बच्चे को माँ का पहला दूध (कोलोस्ट्रम) अवश्य पिलाना चाहिए। यह दूध बच्चे को रोगों से लड़ने की क्षमता प्रदान करता है। दूध पिलाने से पहले थनों को लाल दवा के घोल से धो लेना चाहिए। बच्चों को अलग-अलग साफ बाड़े में रखना चाहिए और ठंड से बचाने के लिये सूखा बिछावन करना चाहिए। बच्चों की 2 माह की उम्र के बाद माँ का दूध पिलाना बंद कर दें।

डिपिंग प्रबंधन

बकरियों में बाहरी परजीवी जैसे जूँ, पिस्सू और टिक (किलनी) बड़ी समस्या पैदा करते हैं। इनके नियंत्रण के लिये बकरियों को साल में कम से कम 1-2 बार कीटनाशक द्रव में डुबाना (डिपिंग) चाहिए। डिपिंग में मौसम का विशेष ध्यान रखें (वर्षा के दिनों में पर्याप्त धूप होने पर ही डिपिंग करें)। भारत में बकरियों को शीत ऋतु के बाद ऊन कतराई (शेयरिंग) से ठीक पहले तथा/या शरद ऋतु के बाद ऊन कतराई से पहले डिप किया जा सकता है।

डिपिंग में प्रयुक्त रसायन

- बी.एच.सी.
- लिंडेन: 0.25%
- डीडीटी: 0.5%
- गाराथियॉन
- मैलाथियॉन: 2.0%
- साइमाथियॉन
- पाइरेथ्रिन-आर्सेनिक सल्फ़ाइड पाउडर: 0.2% आर्सेनिक
- कोल टार-क्रियोज़ोट: 0.76%
- निकोटीन और तम्बाकू डिप्स: 0.1% निकोटीन (15 किलोग्राम तम्बाकू की पत्तियाँ 500 लीटर पानी में)

टीकाकरण अनुसूची

रोग	टीकाकरण की आयु/समय	पुनः टीकाकरण अंतराल
पी.पी.आर.	3 माह की आयु पर	3 वर्ष में एक बार
खुरपका-मुंहपका	3 माह की आयु पर	6 माह के अंतराल पर
बकरीचेचक	3 माह की आयु पर	1 वर्ष में एक बार
एंटरोटॉक्सिमिया	3 माह की आयु पर	6 माह के अंतराल पर
टिटनस	घाव या शल्यक्रिया के समय	आवश्यकता अनुसार
गलघोंटू/हेमरेजिक सेप्टीसीमिया	बरसात शुरू होने से पहले (मई-जून)	1 वर्ष में एक बार

बकरी से आय के साधन

बकरी पालन किसानों के लिये कई प्रकार से आय का स्थायी और लाभदायक स्रोत बन सकता है। सबसे पहले दूध उत्पादन से

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 06 सितम्बर, 2025

अच्छी कमाई की जा सकती है, क्योंकि बकरी का दूध अत्यंत पौष्टिक होता है, इसमें औषधीय गुण पाए जाते हैं और यह बच्चों एवं बीमार व्यक्तियों के लिये विशेष रूप से उपयोगी माना जाता है। बाजार में बकरी के दूध की अच्छी कीमत मिलती है, साथ ही इससे पनीर, दही और मिठाई जैसे उत्पाद बनाकर अतिरिक्त आय भी अर्जित की जा सकती है।

दूसरा महत्वपूर्ण स्रोत है मांस उत्पादन। बकरी का मांस (चेवोन) स्वादिष्ट, कम वसा वाला और सेहत के लिये लाभकारी होने के कारण लोगों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय है। शादियों, त्योहारों और विशेष अवसरों पर इसकी मांग और भी अधिक बढ़ जाती है। यही कारण है कि बकरी का मांस सालभर ऊँचे दामों पर बिकता है।

इसके अलावा, बच्चों की बिक्री किसानों के लिये आय का बड़ा साधन है। यदि किसान अच्छी नस्ल की बकरियों का पालन करें तो उनके बच्चे ऊँचे दामों पर बिकते हैं। सामान्यतः बकरी के बच्चे 6 से 12 माह की आयु में बेचने पर अच्छे दाम मिलते हैं, क्योंकि इस उम्र तक उनका विकास पर्याप्त हो चुका होता है और बाजार में उनकी मांग अधिक रहती है। बिक्री करते समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि मूल्य निर्धारण बकरी के शारीरिक भार के आधार पर किया जाए।

खाल और खाद भी अतिरिक्त आय के स्रोत हैं। बकरी की खाल चमड़े के उद्योग में उपयोग की जाती है जिससे जूते, बैग, बेल्ट और अन्य सामान बनाए जाते हैं। वहीं बकरी का गोबर खेतों के लिये उत्तम जैविक खाद है, जो न केवल मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है बल्कि रासायनिक खादों पर होने वाला खर्च भी कम करता है।

इसके साथ ही, बकरी पालन से अन्य उत्पादों जैसे सींग और बालों का भी उपयोग हस्तशिल्प व घरेलू उद्योगों में किया जाता है। कई किसान प्रजनन हेतु नर बकरों (ब्रीडिंग बक्स) की बिक्री करके भी अच्छी कमाई करते हैं। इस प्रकार बकरी पालन छोटे और सीमांत किसानों के लिये न्यूनतम लागत पर अधिकतम लाभ देने वाला व्यवसाय है।

निष्कर्ष

बकरी पालन सीमांत एवं लघु किसानों के लिये आय और पोषण का सशक्त साधन है। वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर किसान दूध, मांस, बच्चे, खाल और खाद से अच्छा लाभ कमा सकते हैं। उचित आहार, स्वच्छ आवास, स्वास्थ्य प्रबंधन, टीकाकरण और नवजात शिशुओं की देखभाल बकरी पालन की सफलता की कुंजी है। यदि किसान इन वैज्ञानिक विधियों को नियमित रूप से अपनाएँ तो बकरी पालन उनके लिये स्थायी, सुरक्षित और अत्यधिक लाभकारी उद्यम सिद्ध हो सकता है।

●●●